तस्य रक्षां सदा कुर्याच्चक्रं विष्णोर्महात्मनः।
मयैतत्कवचं विप्र दत्तात्रेयान्मुनीश्वरात्॥१३६॥
श्रुतं तुभ्यं निगदितं धारयस्वाखिलेष्टदम्॥१३७॥

इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने तृतीयपादे कार्तवीर्यकवचकथनं नाम सप्तसप्ततितमोऽध्यायः॥७७॥

इस कवच का पाठ करके जल को अभिमंत्रित करे। (जल सामने रखकर पाठ करे) उस जल से कवच पाठोपरान्त देह सिंचन करे। इससे विष, कृत्यादि, रोग, स्फोट का भय नहीं रहता। कार्त्तवीर्य, खलद्वेषी, कृतवीर्यसुत, बली, सहस्रबाहु, शत्रुघ्न, रक्तवासा, धनुर्धर, रक्तगंध, रक्तमालाधारी हैं। स्मरण कर्त्ता को अभीष्ट देने वाले हैं। जो कार्त्तवीर्य के इन बारह नामों को पढ़ता है, उसे सम्पदा मिलती है तथा लोग उसके वशीभूत हो जाते हैं। हे विप्र! जो सदा श्री चक्रावतार कार्त्तवीर्य की सेवा करते हैं, उनकी रक्षा विष्णु का महाचक्र सदा करता है। हे विप्र! मैंने मुनीश्वर दत्तात्रेय से जिस प्रकार यह कवच सुना था, तदनुरूप आपसे कहा। आप इस सर्वइष्टप्रद कवच को धारण करे।।१३२-१३७।।

।।७७वां अध्याय समाप्त।।

❖❖❖

अथाष्टसप्ततितमोऽध्यायः

हनुमत्कवच वर्णन

सनत्कुमार उवाच

कार्तवीर्यस्य कवचं कथितं ते मुनीश्वर। मोहविध्वंसनं जैत्रं मारुतेः कवचं शृणु॥१॥
यस्य सन्धारणात्सद्यः सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः। भूतप्रेतारिजं दुःखं नाशमेति न संशयः॥२॥

देवर्षि सनत्कुमार कहते हैं—"हे मुनीश्वर! मैंने कार्त्तवीर्य कवच आपसे कह दिया। अब हनुमत्कवच सुनिये जो मोह विध्वंसन तथा विजयदायक है। इसे धारण करने से सद्यः भूत-प्रेत, रिपु जनित समस्त दुःख नष्ट हो जाते हैं।।१-२।।

एकदाहं गतो द्रष्टुं रामं रमयतां वरम्। आनन्दवनिकासंस्थं ध्यायन्तं स्वात्मनः पदम्॥३॥
तत्र रामं रमानाथं पूजितं त्रिदशेश्वरैः। नमस्कृत्य तदादिष्टमासनं स्थितवान् पुरः॥४॥
तत्र सर्वं मया वृत्तं रावणस्य वधान्तकम्। पृष्टं प्रोवाच राजेन्द्रः श्रीरामः स्वयमादरात्॥५॥
ततः कथान्ते भगवान्मारुतेः कवचं ददौ।
मह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि न प्रकाश्यं हि कुत्रचित्॥६॥

भविष्यदेतन्निर्दिष्टं बालभावेन नारद। श्रीरामेणाञ्जनासूनोर्भुक्तिप्रदायकम्।।७।।

रमण करने वाले श्रेष्ठ राम के दर्शनार्थ एक बार मैं गया था। वे आनन्दवन में आसीन होकर वे आत्मपद का ध्यान कर रहे थे। तब मैंने देवेश्वर राम रमानाथ का वहां पूजन किया तथा उनको प्रणाम करके उनके आदेश से उनके समक्ष आसनासीन हो गया। तब मैंने उनसे रावणवध सम्बन्धित वृत्तान्त को पूछा। यह पूछने पर राजेन्द्र श्रीराम ने स्वयं आदरपूर्वक उस वृत्तान्त को कहकर हनुमत्कवच मुझे प्रदान किया। मैं वही कवच आपसे कह रहा हूं। हे नारद! इसे जहां-तहां प्रकाशित नहीं करना चाहिये। श्रीराम ने हनुमान के इस भुक्ति-मुक्तिदायक कवच को बालभाव से मुझसे कहा था।।३-७।।

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणो पवनात्मजः। पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः सौम्ये सागरतारकः।।८।।
उर्द्ध पातु कपिश्रेष्ठः केसरिप्रियनन्दनः। अधस्ताद्विष्णुभक्तस्तु पातु मध्य च पावनिः।।९।।

लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्।
सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः।।१०।।

भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्। नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः।।११।।
कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः। नासाग्रमञ्जनासूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः।।१२।।

पातु कण्ठे तु दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरारिजित्।
भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः।।१३।।

नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः। वक्षे मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः।।१४।।

लङ्का निभर्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्।
नाभिं श्रीरामभक्तस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः।।१५।।
गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सक्थिनी अतिथिप्रियः।
ऊरु च जानुनी पातु लङ्काप्रासादभञ्जनः।।१६।।
जङ्घे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः।
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।।१७।।
अङ्गानि पातु सत्त्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीः सदा।
मुखाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान्।।१८।।

यथा—हनुमान पूर्व में, पवनात्मज दक्षिण में, अक्षघ्न पश्चिम में, उत्तर में समुद्रतारक मेरी रक्षा करें। ऊर्ध्व में कपिप्रवर केसरी नन्दन, अधः में विष्णुभक्त, मध्य में पवनपुत्र तथा सर्वापत्ति में लंकादाहक सदा मेरी रक्षा करें। सुग्रीव सचिव मस्तक की, वायुनन्दन भाल की, महावीर निरन्तर भ्रूमध्य की, छायापहारी नेत्र की, प्लवंगेश्वर कपोल की, रामकिंकर कर्ण मूल की, अंजनिपुत्र नासाग्र की, हरीश्वर मुख की, दैत्यारि कण्ठ की, सुरारिजित् स्कन्ध की, महातेजा बाहु की, चरणायुध करों की, नखायुध नख की, कपीश्वर कुक्षि की, मुद्रापहारी वक्ष की, भुजायुध पार्श्व की, लंका निभर्जन पृष्ठ देश की, श्रीरामभक्त नाभि की, अनिलात्मज कटि की,

महाप्राज्ञ गुह्य की, अतिथिप्रिय सक्थिनी की, लंका प्रासाद भंजन उरु एवं जानु की, कपिश्रेष्ठ जंघा की, महाबल गुल्फ की, अचलोद्धारक (पर्वत उद्धारक) चरण की एवं सूर्यतुल्य अंग की सदा रक्षा करें। सत्वाड्य पैर की उंगलियों की सदा रक्षा करें। मुखांग की रक्षा महाशूर करें। आत्मवान् रोमों की रक्षा करें।।८-१८।।

दिवारात्रौ त्रिलोकेषु सदागतिसुतोऽवतु। स्थितं व्रजन्तमासीनं पिबन्तं जक्षतं कपिः॥१९॥
लोकोत्तरगुणः श्रीमान् पातु त्र्यम्बकसम्भवः। प्रमत्तमप्रमत्तं वा शयानं गहनेऽम्बुनि॥२०॥

वायुपुत्र जो त्रैलोक्यगमन करते हैं, वे अहर्निश मेरी रक्षा करें। उठते-बैठते, चलते, पान करते, भोजन करते, हर समय कपि मेरी रक्षा करें। श्री हनुमान प्रमत्तावस्था किंवा अप्रमत्तावस्था में, अथाह जल में, मेरी रक्षा करें। जो लोकोत्तर गुणसम्पन्न तथा शंकर से उत्पन्न हैं।।१९-२०।।

स्थलेऽन्तरिक्षे ह्यग्नौ वा पर्वते सागरे द्रुमे। सङ्ग्रामे सङ्कटे घोरे विराडरूपधरोऽवतु॥२१॥
डाकिनीशाकिनीमारीकालरात्रिमरीचिकाः। शयानं मां विभुः पातु पिशाचोरगराक्षसीः॥२२॥

स्थल, अन्तरिक्ष में, अग्नि किंवा पर्वत में, सागर में, वृक्ष पर, संग्राम में, घोर संकट में विराट्रूपी मेरी रक्षा करें। डाकिनी, शाकिनी, महामारी, कालरात्रि, मरीचिका से रक्षा करें। जब मैं शयान रहूं तब विभु पिशाच, सर्प तथा राक्षसी से मेरी रक्षा करें।।२१-२२।।

दिव्यदेहधरो धीमान्सर्वसत्त्वभयङ्करः। साधकेन्द्रावनः शश्वत्पातु सर्वत एव माम्॥२३॥
यद्रूपं भीषणं दृष्ट्वा पलायन्ते भयानकाः। स सर्वरूपः सर्वज्ञः सृष्टिस्थितिकरोऽवतु॥२४॥

स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः साक्षाद्देवो महेश्वरः।
सूर्यमण्डलगः श्रीदः पातु कालत्रयेऽपि माम्॥२५॥

दिव्यदेही, धीमान्, सभी प्राणीगण हेतु भयंकर साधक रक्षक, विभु सदा सर्व मेरी रक्षा करें। जिनके भीषण रूप का अवलोकन करके भयानक प्राणी भी पलायन कर जाते हैं, वे सर्वरूप, सर्वज्ञ, सृष्टि तथा स्थिति करने वाले मेरी रक्षा करें। स्वयं ब्रह्मा, स्वयं विष्णु, स्वयं देव महेश्वर, सूर्यमण्डलगामी, श्रीप्रद तीनों काल में मेरी रक्षा करें।।२३-२५।।

यस्य शब्दमुपाकर्ण्य दैत्यदानवराक्षसाः।
देवा मनुष्यास्तिर्यञ्चः स्थावरा जङ्गमास्तथा॥२६॥
सभया भयनिर्मुक्ता भवन्ति स्वकृतानुगाः।
यस्यानेककथाः पुण्याः श्रूयन्ते प्रतिकल्पके॥२७॥
सोऽवतात्साधकश्रेष्ठं सदा रामपरायणः। वैधात्रधातृप्रभृति यत्किञ्चिद्दृश्यतेऽत्यलम्॥२८॥
विद्धि व्याप्तं यथा कीशरूपेणानञ्जनेन तत्।
यो विभुः सोऽहमेषोऽहं स्वीयः स्वयमणुर्बृहत्॥२९॥

जिनका शब्द सुनकर दैत्य, दानव, राक्षस, देवता, मानव, पशु, पक्षी, स्थावर, जंगम भयग्रस्त हो जाते हैं, जिनके शब्द से भक्त निर्भय हो जाते हैं, प्रति कल्पभेद से जिनकी नाना पुण्या कथायें सुनी जाती हैं,

वे सदारामपरायण देव साधक श्रेष्ठ की रक्षा करें। धाता, विधाता जो कुछ भी परिलक्षित होते हैं, वे कीशरूपी अञ्जनिनन्दन से सदा व्याप्त हैं। जो विभु परमात्मा हैं, वही मैं हूं। वे ही हनुमान् हैं। वे अणु तथा बृहत् दोनों हैं।।२६-२९।।

ऋग्यजुः सामरूपश्च प्रणवस्त्रिवृदध्वरः।
तस्मै स्वस्मै च सर्वस्मै नतोऽस्म्यात्मसमाधिना॥३०॥
अनेकानन्तब्रह्माण्डधृते ब्रह्मस्वरूपिणे। समीरणात्मने तस्मै नतोऽस्म्यात्मस्वरूपिणे॥३१॥
नमो हनुमते तस्मै नमो मारुतसूनवे। नमः श्रीरामभक्ताय श्यामाय महते नमः॥३२॥
नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे। लङ्काविदहनायाथ महासागरतारिणे॥३३॥
सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च। रावणान्तनिदानाय नमः सर्वोत्तरात्मने॥३४॥
मेघनादमखध्वंसकारणाय नमोनमः। अशोकवनविध्वंसकारिणे जयदायिने॥३५॥

ऋक्, यजुः, प्रणव, त्रिवृत, यज्ञ हनुमान् का ही रूप है। मैं इनको, स्वयं को, सबको आत्मसमाधि रूप से प्रणाम करता हूं! अनेकान्त ब्रह्माण्ड को धारण करने वाले, ब्रह्मरूप पवनपुत्र को मैं आत्मस्वरूप रूप से प्रणाम करता हूं! हे हनुमान्, मारुतिनन्दन! आपको नमस्कार! श्रीरामभक्त महान् को नमस्कार! हे वानर वीर! आप सुग्रीव की (राम से) मित्रता कराने वाले हैं। आपको नमस्कार! आप लंका दहन करने वाले, महासागर पार करने वाले, सीता के शोक का नाश करने वाले, राम की मुद्रिका धारण करने वाले, रावण का अन्त करने वाले, सर्वश्रेष्ठात्मा हैं। आपको नमस्कार! आप मेघनाद के यज्ञ ध्वंस के कारण हैं। आप अशोक वन विध्वंस करने वाले जयदाता हैं। आपको नमस्कार!।।३०-३५।।

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने। वनपालशिरश्छेत्रे लङ्काप्रासादभञ्जिने॥३६॥
ज्वलत्काञ्चनवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे। सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः॥३७॥

हे वायुपुत्र! वीर, आकाशगामी, वनरक्षकगण का शिर भंजन करने वाले, लंका के महलों को भग्न करने वाले, ज्वलत् स्वर्ण वर्ण वाले, दीर्घ पूंछ धारी, लक्ष्मण को जय दिलाने वाले रामदूत आपको प्रणाम!।।३६-३७।।

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मशस्त्रनिवारिणे। लक्ष्मणाङ्गमहाशक्तिजातक्षतविनाशिने॥३८॥
रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय नमो नमः। ऋक्षवानरवीरौघप्रासादाय नमो नमः॥३९॥
परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः। विषघ्नाय द्विषघ्नाय भयघ्नाय नमो नमः॥४०॥
महारिपुभयघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे। परप्रेरितमन्त्राणां मन्त्राणां स्तम्भकारिणे॥४१॥
पयःपाषाणतरणकारणाय नमो नमः। बालार्कमण्डलग्रासकारिणे दुःखहारिणे॥४२॥
नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च। विहङ्गमाय शैवाय वज्रदेहाय ते नमः॥४३॥

आप अक्षय कुमार का वध करने वाले, ब्रह्मास्त्र का निवारण करने वाले, लक्ष्मण के अंग पर महाशक्ति प्रहार से उत्पन्न घाव का नाश करने वाले, राक्षस-शत्रु तथा भूतों के नाशक! आपको पुनः-पुनः नमस्कार! आप रीछ-वानर वीर यूथों को प्रसन्न करने वाले, परसैन्यबल नाशक, शस्त्रास्त्र नाशक हैं। आपको

नमस्कार! आप विषघ्न, रिपुघ्न, भयघ्न हैं। आपको नमस्कार! आप महारिपुभय नाशक, भक्त के त्राण के एकमात्र कारण, पर प्रेरित मन्त्रों, मन्त्रों का स्तम्भन करने वाले, जल पर पाषाण तक को तैराने वाले, बालसूर्यमण्डल का ग्रास करने वाले, दुःखहारी, नखायुध, भीम, दन्तायुध, विहंगमरूप (आकाशचारी), शैव, वज्रदेह हैं। आपको पुनः-पुनः नमस्कार!।।३८-४३।।

प्रतिग्रामस्थितायाथ भूतप्रेतवधार्थिने। करस्थशैलशस्त्राय रामशस्त्राय ते नमः॥४४॥
कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च। दक्षिणाशाभास्कराय सतां चन्द्रोदयात्मने॥४५॥
कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च। सर्वाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे भयहारिणे॥४६॥
भक्तानां दिव्यवादेषु सङ्ग्रामे जयकारिणे।
किल्किलावुवकाराय घोरशब्दकराय च॥४७॥
स्वाम्याज्ञापार्थसङ्ग्रामसख्यसञ्जयकारिणे। सदा वनफलाहारसन्तृप्ताय विशेषतः॥४८॥
महार्णवशिलाबद्धसेतुबन्धाय ते नमः। इत्येतत्कथितं विप्र मारुते कवचं शिवम्॥४९॥

आप प्रतिग्राम में स्थित, भूत-प्रेत नाशक, हाथों पर पर्वत रूपी शस्त्रधारी, राम के शस्त्र, कौपीनधारी, रामभक्ति निरत, दक्षिण दिशा के भास्कर तथा सत् लोगों हेतु चन्द्ररूप हैं। आपको नमस्कार! आप कृत्य-अकृत्य जनित व्रणों के हरणकर्त्ता, सर्वक्लेशनाशक, स्वामी की आज्ञा से संग्राम में अर्जुन से मैत्री करने वाले, सदा वन फलाहार से तृप्त, भक्तजनों को दिव्य विवाद-संग्राम में विजय प्रदाता, सर्व अग्नि, व्याधि स्तम्भन करने वाले, भयहारी, किलकिलाहट रूपी घोर शब्द करने वाले, महासागर में शिलाओं से सेतु बन्धन करने वाले आपको नमस्कार! हे विप्र! यह कल्याणप्रद दिव्य मारुत कवच कहा गया।।४४-४९।।

यस्मै कस्मै न दातव्यं रक्षणीयं प्रयत्नतः। अष्टगन्धैर्विलिख्याथ कवचं धारयेत्तु यः॥५०॥
कण्ठे वा दक्षिणे वाहौ जायस्तस्य पदे पदे। किं पुनर्बहुनोक्तेन साधितं लक्षमादरात्॥५१॥
प्रजप्तमेतत्कवचमसाध्वं चापि साधयेत्॥५२॥

इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने तृतीयपादे हनुमत्कवचनिरूपणं नामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः॥७८॥

इसे जिस-किसी को प्रदान न करें तथा प्रयत्नतः रक्षा करें। इस कवच को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर जो कण्ठ में किंवा दाहिनी भुजा में पहनता है, उसे पग-पग पर विजयलाभ होता है। अधिक क्या कहें। जो इस कवच का पाठ एक लाख बार करेगा, वह तो असाध्य की भी सिद्ध करेगा!।।५०-५२।।

।।७८वां अध्याय समाप्त।।

❖❖❖